चमत्कालङ्कार

डॉ. मथुरेश नन्दन कुलश्रेष्ठ

Scanned by TapScanner

विषय–सूची

प्रथम अध्याय

(पृष्ठ १७ से २१ तक)

स्थान-नियम और अर्थ-वैभिन्न्य

१– यमक के तत्व (१७), २ – स्थान-नियम का मूल छन्द-शास्त्र की गण-पद्धति (१७), ३–वर्णिक छन्द और स्थान-नियम (१८), ४–स्थान-नियम की अन्यथा महत्ता (१९), ५–ऋग्वेद में प्राप्त सहज यमक (२०),६–निष्कर्ष (२१)

द्वितीय अध्याय

(पृष्ठ २२ से १५६ तक)

संस्कृत काव्यशास्त्र में यमकालंकार का विवेचन

१– **भरत** (२३), भरत द्वारा स्वीकृत चार अलंकार (२३), यमक का लक्षण (२४) यमक के भेद (२५), पादान्त यमक (२५), काञ्ची यमक (२६), समुद्ग-यमक (२८) , विक्रान्त यमक (२८) , चक्रवाल यमक (२९), सन्दष्ट यमक (३०), पादादि यमक (३०), आम्रेड़ित यमक (३०), चतुर्व्यवसित यमक (३१), माला यमक (३२), सारांश (३४)

२– **भामह** (३४), लक्षण (३४), आदि यमक (३५), मध्यान्त यमक (३६) , पादाभ्यास यमक (३६), आवली यमक (३७), समस्तपाद यमक (३७), यमक प्रयोग संबंधी कुछ नियम (३८)

३– **दण्डी** (४०), यमक लक्षण (४१), यमक के भेद (४१), पदावृत्तिगत यमक के ३१५ भेद (४२), संदष्ट यमक (४६), पादावृत्तिगत भेद, समुद्ग (४७), महायमक (५१), प्रतिलोम यमक (५२), सारांश (५३)

४– **उद्भट** (५४)

५– **वामन** (५५), लक्षण (५६), स्थान-नियम (५६), पाद यमक (५८), अक्षर यमक (५९), भङ्गादुत्कर्षः (६१) श्रृंखला (६२); परिवर्तक (६२) चूर्ण (६३), सारांश (६४)

६– **रुद्रट** (६५), लक्षण (६५) , यमक के भेद (६८) , भेदों की तालिका (६९), समस्त पाद गत यमक (७०) , मुख, संदंश, (७०), आवृत्ति , गर्भ (७१), संदष्टक, पुच्छ (७२), समुद्ग, महायमक (७५) एक देशगत यमक (७७) , पादार्द्धावृत्तिगत एकदेशीय यमक (७७), पाद चतुर्थांशावृत्तिगत एक देशीय यमक (८४), पाद चतुर्थांशावृत्तिगत यमक भेदों का योग (९२), पाद तृतीयांशावृत्तिगत एकदेशीय यमक (९३), देश अवयव निरपेक्ष भेद (९५), यमक-भेद के प्रतिबन्ध (९६), रुद्रट के विवेचन का सारांश (९७)

७– **आनन्दवर्द्धन** (९८), अंगीरूप श्रृंगार रस और यमक (९९), रसकाव्य और यमक (१००), रसाभास और यमक (१००), सारांश (१०१)

Scanned by TapScanner

८– राजशेखर (१०१)

९– अग्निपुराण (१०३)

१०– कुन्तक (१०६), यमक के तत्व (१०८), रघुवंश एवं शिशुपाल-वध के यमक-प्रयोग और यमकाभास (१०९), सारांश (११०)

११– भोज (११०), लक्षण (१११), भेद (१११), यमक-भेद की सारिणी (११३–१५), स्थान-यमक (११६), पाद यमक (११९), अस्थान यमक (१२०), पाद स्थूल अव्यपेत यमक (१२२), पाद सूक्ष्म अव्यपेत यमक (१२३), श्लोक स्थूल अव्यपेत (१२४), श्लोक सूक्ष्म अव्यपेत (१२५), पादसन्धावन्यभेदोच्छेद स्थूल यमक (१२५), अन्य भेदानुच्छेदेन सूक्ष्म यमक (१२७), स्वभेदे पूर्वभेदानुच्छेदेन स्थूल यमक (१२८), स्वान्य भेदोच्छेद सूक्ष्म यमक (१२९), पाद स्थूल व्यपेत (१३०), पाद सूक्ष्म व्यपेत (१३१), श्लोक स्थूल व्यपेत (१३२), श्लोक सूक्ष्म व्यपेत (१३२), पाद सन्धिगत स्थूल व्यपेत (१३३), कांची यमक अव्यपेत तथा व्यपेत सूक्ष्म अस्थान यमक (१३५), स्वभेदान्यभेदयो स्थूल सूक्ष्म यमक (१३६), सूक्ष्म भाग की अनेक आवृत्तियों से उत्पन्न स्थूल सूक्ष्म (१३७), सारांश (१३८)

१२– मम्मट (१३९),

१३– रुय्यक (१४२), पुनरुक्तिगत अलंकार (१४२), लक्षण (१४३), टीकाकार जयरथ और स्थान नियम (१४५), सारांश (१४५)

१४– वाग्भट (१४६), लक्षण (१४६), यमक भेद (१४७), वर्ण-यमक (१४९), यमक हेतु भाषा सम्बन्धी नियम (१५१), सारांश (१५१)

१५– जयदेव (१५२)

१६– विश्वनाथ (१५२), सत्यर्थे की व्याख्या (१५३) उदाहरण (१५३), नियम (१५४)

१७– अन्य काव्यशास्त्री (१५४), केशवमिश्र, शोभाकर मित्र, विद्यानाथ (१५४), पण्डितराज जगन्नाथ (१५५) अप्पयदीक्षित (१५५)

१८– अध्याय का सारांश (१५५)

तृतीय अध्याय

संस्कृत काव्यशास्त्र में यमक का स्वरूप

(पृष्ठ १५७ से २५० तक)

१– भूमिका (१५७)

२– स्थान-नियम (१५८); वामन का स्थान-नियम (१५९), स्थान-नियम और छन्द (१६२), रुद्रट का गणितीय स्थान-नियम (१६२), रुद्रट के उदाहरणों की स्थान-नियम तालिका के रूप में प्रस्तुति (१६३–६४), दण्डी का उदार स्थान-नियम (१६६), दण्डी के स्थान-नियम का तालिका रूप प्रस्तुतीकरण (१७०), स्थान-नियम और चित्रालंकार (१७२)

Scanned by TapScanner

३– **संस्कृत काव्य के यमक–प्रयोगों में स्थान-नियम** (१७३), रघुवंश (१७४), शिशुपालवध (१७५), किरातार्जुनीयम् (१७९)

४– **स्थान-नियम का सामान्य स्वरूप** (१८२)

५– **अर्थ-वैभिन्न्य** (१८३), उभय भाग निरर्थक (१८४), उभय भाग सार्थक (१८६), प्रथम भाग सार्थक द्वितीय निरर्थक (१८८), प्रथम निरर्थक द्वितीय सार्थक (१८९), प्रत्येक भाग का कुछ अंश सार्थक कुछ निरर्थक (१९१)

६– **भंगादुत्कर्षः** (१९४), श्रृंखला (१९४), परिवर्तक (१९९), चूर्ण (२०१)

५– **यमक भिन्नार्थकता और शब्द- शक्ति** (२०२)

८– **यमक के भेद** (२०२), अस्थान यमक (२०२), सूक्ष्म और स्थूल यमक (२०३), वर्ण-यमक (२०५), व्यपेत अव्यपेत भेद (२०६). स्वभेद अन्य भेद (२०७), अद्भुत यमक (२०९), महायमक (२१०), प्रतिलोम यमक (२१२), प्रतिलोम यमक के भेद (२१४)

९– **यमक और अनुप्रास** (२१५), अनुप्रास के क्षेत्र में यमक का प्रवेश (२१८), यमक के क्षेत्र में अनुप्रास का प्रवेश (२२२), सीमा-रेखा का निर्धारण (२२७)

१०– **यमकाभास** (२३०)

११– **यमक और श्लेष** (२३१), यमकाद्भुत और श्लेष (२४३), यमक श्लेष की तुलना (२४६)

१२– अध्याय का निष्कर्ष (२४९)

चतुर्थ अध्याय
हिन्दी काव्यशास्त्र में यमकालंकार
(पृष्ठ २५१ से ३६४ तक)

१– **भूमिका** (२५१)

२– **रीतिकालीन कवियों का यमक-विवेचन** (२५२–२८२)

केशव (२५२), जसवंत सिंह (२६०), चिन्तामणि (२६१), कुलपति मिश्र (२६२), देव (२६५), सूरति मिश्र (२७१), दूलह (२७१), भिखारीदास (२७२), गोविन्ददास (२७७), ब्रह्मदत्त (२७८), गंगासुत (२७९)

३– **यमक-सिद्ध काव्य** (२८२), यमक सतसई (२८२), वृन्द के यमक-प्रयोग की विशेषताएँ (२८५)

४– **आधुनिक काल** (२५५)

(अ) रीतिकालीन शैली के आचार्य (२८८), ग्वाल (२८९), गंगाधर (२९०), मुरारिदान (२९२), जगन्नाथ प्रसाद "भानु" (२९३), लाला भगवानदीन (२९५), रामदहिन मिश्र (२९७)

Scanned by TapScanner

- CIRCULAT

(ब) शोध-प्रबन्धों में यमक विवेचन (२९९) डॉ. ओमप्रकाश (२९९); डॉ. प्रह्लाद कुमार(३००),डॉ.देशराज सिंह भाटी (३००);डॉ.ब्रह्मानन्द शर्मा (३०१),डॉ.वचनदेव कुमार (३०१); डॉ.राजकुमारी त्रिखा (३०१)

५– **हिन्दी यमक-विवेचन का संस्कृत के साथ तुलनात्मक निष्कर्ष** (३०२), लक्षण (३०२), यमक के भेद (३०७), सिंहावलोकन यमक (३०८) पाद यमक (३१३), स्थान-नियम— हिन्दी काव्य के संदर्भ में (३१३),सवैया और स्थान-नियम (३१४),कवित्त और स्थान-नियम (३२०),स्थान-नियम और दोहा (३२४),बिहारी के दोहे और स्थान-नियम (३२८),'अंगराज' के द्रुतविलम्बित प्रयोग और स्थान-नियम (३३५), भिन्नार्थकता (३४२), अनेकार्थक शब्दों का प्रयोग (३४३),श्लेष,वीप्सा और यमक के सम्मिलित प्रयोग (३४८),भंगादुत्कर्ष:(३५२), आदि वर्ण-लोप (३५३), अन्तवर्ण लोप (३५४), आदिवर्ण आगम (३५४), अन्तवर्ण आगम (३५५),शब्द-विच्छेद एवं वर्ण पुनर्नियोजन की छः स्थितियाँ (३५६); पादयमक (३६१); तीन प्रक्रियाओं का एक उदाहरण (३६२)

६– **अध्याय का निष्कर्ष** (३६३)

पंचम अध्याय

पाश्चात्य काव्यशास्त्र में यमकालंकार के तत्व

(पृष्ठ ३६५–३७५ तक)

१.पाश्चात्य और भारतीय काव्यशास्त्र में यमक विवेचन का अन्तर(३६५)

२. बीड का विवेचन– एनैडीप्लोसिस (३६५) ; एनाफोरा (३६६) ; एपैनैलैप्सिस (३६७); एपीजैक्सिस (३६७); ३.पैरोनौमेशिया (३६८) ४.पन (३६९) ५.मौण्टैकासीनो का विवेचन (३७०),६.व्यावहारिक प्रयोग (३७४),७.निष्कर्ष (३७५)

उपसंहार

(पृष्ठ ३७६–३८२ तक)

परिशिष्ट

१.दण्डी के पादादि के उदाहरण (३८३)

२.सन्दर्भ ग्रन्थ (३८५)

३.उद्धरणानुक्रमणिका (३८९)

४.विषयानुक्रमणिका (३९९)

Scanned by TapScanner